रमेश मनोहरा

वर्षा के दोहे

वर्षा के दोहे

पर्यावरण का यारों, मिलकर करें उद्धार,
प्रदूषित दिखे जहां पर, करें आप उपचार,
हरियाली यदि देखना, पौधे खूब लगाएं,
इस धरती को फिर सदा, हरा-भरा ही पाएं,
पेड़ रहे गहरे यहां, खूब होय बरसात,
फिर तो हमको मिले, पानी की कमी से निजात,
मौसम प्रदूषण मुक्त हो, लें खुलकर सांस,
कूड़ा करकट साफ हो, ऐसा करें प्रयास,
हरे-भरे पहाड़ रहें, रहे नदी आबाद,
तब होगा नहीं यारों, कोई यहां विवाद,
बंजर होती ये घटा, काटोगे यदि पेड़
फिर पानी के लिए यहां, होगी जी मुठभेड़,
हरियाली बढ़ती रहे, दें आप योगदान,
पर्यावरण की यारों, तभी बढ़ेगी शान,
चहके डाल पर चिड़ियां, वन में नाचे मोर,
पेड़ हो इतने सघन, कलरव का हो शोर,
पर्यावरण होवे ना, रमेश कभी खराब,
आप सब मिलकर लाओ, इसमें नया शबाब,
हम सब अपने घरों में, एक-एक पेड़ लगाएं,
पर्यावरण को यारों, फिर हरा-भरा पाएं।

पानी को मानें वरदान

नदियां खाली हो गई, दिखे वहां पर रेत,
रह गये प्यासे सारे, बिन पानी सब खेत
जल प्रदूषण करके आप, लाते हैं सब रोग,
इसी बात को अब यहां, कब समझेंगे लोग,
जल बचाने का यारों, हरदम करें प्रयास,
तरसेंगे न पानी को, रखिये यह विश्वास,
देखो पानी को हुआ, कैसा रमेश हाल,
त्राही-त्राही हो रही, मच रहा है बवाल,
पानी के लिए हुआ है, आदमी मोहताज,
सूख गये कुएं और नदी, परेशान हैं आज
जितने भी प्रयास करें, बेकार न अब पाए,
पानी बचाने का ही, करें हरदम उपाए,
किल्लत पानी की मची, देखो चारों ओर,
प्यासे सारे रह गये, आदमी और ढ़ोर,
जल बचाने का यारों, घर-घर दें संदेश
फिर रहे नहीं कभी भी, किसी को भी क्लेश,
मचे नहीं जल संकट से, रमेश हा-हाकार,
लगाकर पेड़ करें जी, धरती का श्रृंगार,
पानी से ही बनी है, इस जीवन की शान,
इसलिए आप सब इसे, माने जी वरदान।

पर्यावरण

पेड़ कटने से हुए हैं, खाली जंगल आज,
तब वे पहन न सकेंगे, हरियाली का ताज,
सूखा ही सूखा दिखे, देखिए चारों ओर,
ऐसे जंगल में भला, नाचे कैसे मोर,
बचाकर रखे धन तभी, आवे जब संताप,
पेड़ भी हैं धन सबके, रखें बचाकर आप,
बरसेगा पानी तभी, पौधे खूब लगाएं,
फिर आप सब पानी से, अच्छी राहत पाएं,
पेड़ हमारे मीत हैं, करें नहीं नुक्सान,
राही तो बैठा रहे, छांवों में श्रीमान,
छल-कपट रखते नहीं, और ना रखें दांव,
रखें है व्यवहार सम, इनका है स्वभाव,
पौधा मानव हर एक, मन से यार लगाय,
पूरा जंगल सब में, हरा-भरा हो जाय,
सच कहते है पेड़ ही, जीवन की पहचान,
इसको काटे हम कटें, होगा जी नुक्सान,
रखो बचाकर पेड़ को, इसमें जीवन धार
ये ही नौका जीवन की, यही है पतवार,
वृक्षों से करें दोस्ती, वृक्ष हैं बहुत महान,
इसके बिना जीना भी, लगे मृतक समान,
हम सब यदि यह ठान लें, पेड़ लगावे एक,
हरियाली से धरा भी, पाए श्रृंगार अनेक।

संपर्क करें:
रमेश मनोहरा
शीतला गली, जावरा
जिला रतलाम
(म.प्र.) 457 226